ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 27 अंकः 79 बुलेटिन अवधिः 6 – 10 अक्टूबर, 2018 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 05 अक्टूबर, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	06/10/2018	07/10/2018	08/10/2018	09/10/2018	10/10/2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	34	33	33	33	34
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	18	17	17	17	19
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	साफ	साफ	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	80	75	70	75
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	35	35	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	004	004	006	004
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (28 सितम्बर – 4 अक्टूबर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही आंशिक बादल छाये रहे। अधिकतम तापमान 31.5 से 33.1 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 18.0 से 23.0 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 75 से 94 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 50 से 70 प्रतिशत एवं हवा 3.1 से 6.1 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- अक्टूबर के प्रथम पखवाडे में राई एवं पीली सरसो की बुवाई करें। बिनोय प्रजातियों की बुवाई अक्टूबर माह तक कर सकते है। एकल फसल हेतु बीज दर 4 किग्रा/है0 तथा बुवाई 30 सेमी की दूरी की पंक्तियों में 3–4 सेमी की गहराई पर करनी चाहिए।
- राई की उन्नतशील प्रजातियों – वरूणा, रोहणी, कृष्णा, कान्ति, वरदान, वैभव, बसंती, नरेंद्र, अगेती राई–4, उर्वषी में से एक का चुनाव करें। पीली सरसों की उन्नतशील प्रजातियों –रागिनी, विनोय (बी–9), पंत पीली सरसों–1 में से एक का चुनाव करें।
- मक्का में जब भुट्टों के ऊपरी आवरण पीले पड़ने लगें तब भुट्टों की तुड़ाई करें। इसके उपरांत हरे पौधों को पशुओं हेतु चारे के रूप में प्रयोग करें।
- शरदकालीन गन्ने की बुवाई 15 अक्टूबर तक पूर्ण कर लें।
- जिन किसान भाईयों ने सितंबर माह में तोरिया की बुवाई न की हो वह अक्टूबर प्रथम सप्ताह तक तोरिया की बुवाई करें।
- धान की शीघ्र एवं मध्यम अवधि वाली किस्मों में बालियों के सुनहरें रंग प्राप्त होने की अवस्था में कटाई करें। कटाई में विलम्ब होने पर फसल के गिरने व बालियों में दाना झड़ने का अंदेशा रहता है।
- धान की फसल की कटाई से 10–15 दिन पहले ही सिंचाई बंद कर दें। इससे कटाई के समय दानों में नमी की मात्रा करीब 20 प्रतिशत हो जाती है तथा करीब 10–15 से0मी0 सिंचाई की बचत होती है और फसल 2–3 दिन पहले ही कटाई योग्य हो जाती है।
- अगर मक्का की खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप हो तो क्लोरपाईरीफॉस 20 ई0सी0 के 5 लीटर/है0 मात्रा को 25–30 किग्रा सूखे बालू में मिलाकर, उचित नमी पर सायंकाल में बुरकाव करना चाहिए।
- मक्का की फसल मे पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मक्का में पर्णच्छद अंगमारी के नियंत्रण हेतु निचली पत्तियो को हटा दें तथा प्रोपीकोनाजोल 1 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

उद्यान प्रबन्धः

- इस माह की दूसरे, तीसरे सप्ताह तक पछेती गोभी की रोपाई भी की जा सकती हैं। इसमें 150 कि0ग्रा0 नत्रजन, 80 कि0ग्रा0 फास्फोरस, 60 कि0ग्रा0 पोटाश उर्वरक की आवश्यकता है। जिसमें से आधी मात्रा नत्रजन व सम्पूर्ण फॉस्फोरस खेत की अंतिम जुताई के समय डालें व बची हुई नत्रजन को पौध रोपण के 30–35 दिन बाद व 60–65 दिन बाद करें। पौध रोपण की दूरी 60 से0मी0 कतार से कतार और 50 से0मी0 पौध से पौध रखें।
- जिन किसान भाईयों के खेत में गोभी के अगेती फसल के फल तैयार हो चुके हैं उन्हें काटकर बाजार भेजें तथा मध्यकालीन गोभी की पौध की रोपाई जो पिछले माह की है उसमें यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें। साथ ही निराई गुड़ाई एवं सिंचाई की व्यवस्था करें।
- यदि गोभी की फसल पर पत्ती चूसने वाले कीटों (माहू एवं सफेद मक्खी) का प्रकोप हो तो इसके बचाव हेतु कीटनाशी दवा मैटासिस्टॉक्स 0.1 प्रतिशत अथवा एमिडाक्लोरपिड 0.1 प्रतिशत सांद्रता का घोल बनाकर छिड़काव करें। तथा घोल के साथ सैंडोविट या साबुन का चूरा अवश्य मिलाएँ।
- टमाटर की फसल के लिए पौधशाला का निर्माण कर शीत ऋतु हेतु बीज की बुवाई करें। सामान्य प्रजातियों हेतु 500 ग्राम/है0 व संकर प्रजातियों हेतु 200 से 250 ग्राम/है0 बीज की आवश्यकता है।
- टमाटर एवं मिर्च की फसल मे जड़ एवं तना संधि सड़न रोग के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडरमा 10 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिंचाई करें।
- बगीचें में शाँख गाँठ का प्रकोप होने पर क्यूनौलफॉस 2 मि0ली0/लीटर के हिसाब से प्रयोग करें।
- बाग की जुताई तथा सफाई करवायें तथा खरपतवार का पूरी तरह नियंत्रण करें।

- ❖ आम में नियमित फलन हेतु पैक्लोब्यूट्राजॉल का प्रयोग करें। 1मि0ली0 सक्रिय घटक का प्रति मीटर छत्र फैलाव के हिसाब से डालें।
- ❖ बगीचे में पौध रोपण का कार्य जारी रखें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- ❖ पशुओं के लिए हरे चारे में दलहनी चारा सर्वोत्तम आहार है जो पशुओं के जीवन यापन के साथ–साथ उत्पादन में भी सहायक होता है। अतः पशुपालकों से निवेदन है कि पशुओं को स्वस्थ रखने व अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु सर्वोत्तम दलहनी चारा (बरसीम) अवश्य बोयें क्योंकि 5 कि0ग्रा0 बरसीम (हरा चारा), 1 किलो ग्राम सान्द्र आहार के बराबर होता है।
- ❖ इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ग्यामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।
- ❖ प्रसव के 2 घंटे के भीतर नवजात की अच्छे से सफाई करने के उपरान्त उसको निश्चित रूप से थोड़ी मात्रा (1/2 – 1 कि0ग्रा0) खीस पिला दें।
- ❖ पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
- ❖ जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उस से सही उत्पादन प्राप्त हो सके।

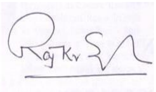

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर